B.A. II Part 10/2/22 डॉ० अर्चना कुमार

Hindi Hons हिंदी

पंत का प्रकृति चित्रण क्रमशः - एस० एस० कॉ०, जहानाबाद

रुकने पर अचानक प्रिया के मिलन होने की आनन्द पूर्ण घटना का वर्णन करने के लिए कवि भी वसन्त की सुषमा का मादक वातावरण प्रस्तुत करता है जो- 'वह मधुर मधुमास था, जब गंध से मुग्ध होकर फूलते थे' में सन्निहित है।

पंतजी प्रकृति को अव्यक्त सत्ता के रूप में देखते हैं। वह उन्हें नक्षत्रों के रूप में मौन निमंत्रण देती है, कभी लहरों के रूप में हाथ उठाकर अपनी ओर बुलाती है, कभी खद्योतों के रूप में पथ दिखाती है और कभी वह उनके स्वप्नों में आकर छायाजगत में विचरण कराती है। पंत जी के हृदय में अव्यक्त सत्ता के प्रति जिज्ञासा जागृत होती है, परन्तु उन्हें यह पता नहीं चलपाता कि वह अव्यक्त सत्ता कौन है। जैसे प्रसाद और महादेवी को पता नहीं चलता, वैसे ही इस अव्यक्त सत्ता के बारे में पंत को भी पता नहीं चलता। निम्न उद्धरण में पंत का रहस्यात्मक प्रकृतिजन्य निखरा हुआ रूप चित्रित होता है —

" प्रथम रश्मि का आना रंगिनी, तूने कैसे पहचाना।
कहाँ- कहाँ हे बाल विहंगिनी, पाया तूने यह गाना।"

पंतजी की कई ऐसी कविताएँ हैं, जिनका प्रकृति- चित्रण उपनिषदों के दर्शन से प्रभावित है। 'एकतारा' और 'नौका विहार' शीर्षक कविताओं में इसी प्रकार का प्रकृति चित्रण हुआ है। 'एकतारा' की निम्न पंक्तियों में 'एकोऽहम् बहु- स्याम्' का प्रभाव स्पष्ट है —

" जगमग- जगमग नभ का आँगन,
लद गया कुंद कलियों से घन
वह आत्म और यह जग दर्शन।"

" नौका -विहार' शीर्षक कविता की अंतिम पंक्तियों में भी उपनिषदों का प्रभाव स्पष्ट दिखा है। यहाँ कवि ने जीवन के अमरत्व के प्रति अपनी आस्था व्यक्त किया है — " इस धारा- सा ही जग का क्रम,
शाश्वत इस जीवन का उद्गम," और नीचे उन्होंने लिखा है — " चिर जन्म-मरण के आर- पार,
शाश्वत जीवन नौका - विहार।"